सदा याद आयेगी आपकी ममता और उपकार
देवी माँ-सा रूप आपका, करुणा और दुलार
फरिश्तों-सा जीवन, सबकी हितैषी, मददगार
जीवन जीवन्त आपका गीता का सच्चा सार
अर्पित आपको हृदय से श्रद्धा सुमन अपार

श्रद्धांजलि

बापदादा की अति लाडली, साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई मीठी अचल बहन – चण्डीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर तथा उत्तरांचल (पंजाब जोन) की मुख्य संचालिका थी। आप वर्ष 1953 में 23 वर्ष की आयु में अमृतसर में ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में आईं। ईश्वरीय प्रेरणाओं से आपने वर्ष 1953 में ही मानवता के आध्यात्मिक उत्थान के लिए अपना जीवन ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित कर दिया। आप 1968 में चण्डीगढ़ में स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका नियुक्त हईं। चण्डीगढ़ में रहते हुए 45 वर्षों तक सारे उत्तर भारत की आध्यात्मिक सेवा की। आप ब्रह्माकुमारी संस्था के सिक्योरिटी सर्विस विंग की अध्यक्षा तथा ब्रह्माकुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी के गवर्निंग बोर्ड की सदस्या थीं। आपने अनेक ब्रह्माकुमारी शिक्षिकाओं को ट्रेनिंग देकर ईश्वरीय सेवाओं के लिए तैयार किया तथा अनेक सेवा-स्थान खोलने के निमित्त बनीं। आप यज्ञ की अनन्य संदेशी भी थी। आप सादगीपूर्ण जीवन से सबको प्रेरणा देने वाली, सबके दिलों को जीतने वाली, ममतामयी माँ बन सबकी पालना करने वाली, सबकी आदर्श तथा असीम स्नेह व करुणा की प्रतिमूर्ति थी।

कुछ समय से आपकी तबियत ठीक नहीं थी। आप 07 अक्तूबर, 2014 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में समा गई। ऐसी स्नेही, अथक सेवाधारी, ईश्वरीय सेवाओं की आदिरत्न, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

खामोश बेशक हूँ...

ब्रह्माकुमारी नीरू, गढ़ी हरसरू (हरियाणा)

खामोश बेशक हूँ पर उदास नहीं हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।

जग के रिश्ते पल के हैं, पल भर ही रहते पास,
शिव साजन से दिल को लगाया, रिश्ता है ये खास।
जीते जी हाँ मर गई लेकिन लाश नहीं हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।।

नहीं चाहिएँ जग के साधन, न जग से है काम,
मिल गया मुझको, मिल गया जाको सबसे ऊँचो धाम।
बाँध के घुंघरू पग पैंजनियाँ, नाच रही हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।।

कोई नहीं किसी का बंदे, काहे राग सताए है,
पांच चोर तेरी खुशियों पर, बैठे घात लगाए हैं।
बेगम बादशाह पत्ते पल के, ताश नहीं हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।।

आत्म-ज्ञान ने दग्ध किया कूड़े का कितना ढेर
लगी लगन अब उनसे मेरी, सांझ-दिवस करूँ टेर।
आए मुझको लेने, गठरी बांध रही हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।।

खामोश बेशक हूँ पर उदास नहीं हूँ मैं,
दूर नहीं इस दुनिया से पर पास नहीं हूँ मैं।